NEWS READING SCRIPT(HINDI)

नमस्कार मैं हूं _____ । आज तक रात 8 बजे में आपका स्वागत है। आइए सबसे पहले नजर डालते है, आज की कुछ खास खबरों पर ।

- कॉलिन पॉवेल दिल्ली पहुँचे। भारत पाक तनाव के मुद्दे पर जसवंत सिंह से बातचीत।
- उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों के लिए B.J.P. के 311 उम्मीदवारों के नाम तय। 3 मंत्रियों संमेत 38 विधायकों के टिकट कटे।
- सतलुज यमुना नहर के मसले पर बादल सरकार फिर सुप्रीम कोर्ट जाने की तैयारी में। चुनावी मुद्दे बनाने में जुटी कॉंग्रेस।
- और ट्राएंगुलर वन डे सीरिज़ में AUSTRALIA की लगातार तीसरी हार NEW ZEALAND ने 23 रनों से हराया।

अब समाचार विस्तार से .....

AMERICA के विदेश मंत्री कॉलिन पॉवेल आज देर शाम करीब 6.30 बजे दिल्ली पहुँच गए है। पॉवेल को वैसे तो 5 बजे दिल्ली आना था लेकिन हवाई उडान में देरी होने की वजह से वह डेढ़ घंटे बाद दिल्ली पहुँचे।

एयरपोर्ट पर पॉवेल ने पत्रकारों से कोई बात नहीं की। वह पाकिस्तान होते हुए भारत आए है। इससे पहले उन्होंने पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ के हाल के उठाए कदमों और शनिवार को दिए उनके भाषण की तारीफ की थी। यहाँ वह विदेश मंत्री जसवंत सिंह राष्ट्रपति सुरक्षा सलाहकार ब्रजेश मिश्रा और प्रधान मंत्री अटल बिहारी वायपेयी से मुलाकात करेंगे। भारतीय नेताओं से बातचीत में पॉवेल सीमा पर पिछले दिनों तनाव और सेना के जमावड़े को कम करने का मुद्दा उठाएंगे।

इसी के साथ हमारे आज के समाचार समाप्त होते है। नमस्कार।

KABHI KABHI (AMITABH BACCHAN DIALOGUE)

कभी-कभी मेरे दिल में ख्याल आता हैं,

कि जिन्दगी तेरी जुल्फों कि नर्म छांव मैं गुजरने पाती,

तो शादाब हो भी सकती थी।

यह रंज-ओ-गम कि सियाही जो दिल पे छाई है,

तेरी नज़र कि शुआओं में खो भी सकती थी।

मगर यह हो न सका और अब ये आलम है,

कि तु नहीं, तेरा ग़म, तेरी जुस्तजू भी नहीं।

गुजर रही हैं कुछ इस तरह जिंदगी जैसे,

इससे किसी के सहारे कि आरज़ु भी नहीं।

न कोई राह, न मंजिल, न रौशनी का सुराग

भटक रहीं है अधरों मैं ज़िन्दगी मेरी।

इन्ही अंधेरों मैं रह जाऊँगा कभी खो कर,

मै जानता हूँ मेरी हम-नफस, मगर यूंही

कभी-कभी मेरे दिल मैं ख्याल आता है।

<u>बल्लीमारॉं के मोहल्लों</u>

बल्लीमारॉं के मोहल्लों की वो पेचीदा दलीलों की-सी गलियॉं

सामने टाल के नुक्कड़ पे बटेरों के क़सीदे

गुडगुडाती हुई पान की पीकों में वह दाद, वह वाह-वा

चंद दरवाजों पे लटके हुए बोसीदा-से कुछ टाट के परदे

एक बकरी के मिमियाने की आवाज़

और धुंधलाई हुई शाम के बेनूर अँधेरे
ऐसे दीवारों से मुहं जोड़ के चलते हैं यहाँ
चूड़ीवालान के कटेर की 'बड़ी बी' जैसे
अपनी बुझती हुई आँखों से दरवाजे टटोले

इसी बेनूर अँधेरी-सी गली क़ासिम से
एक तरतीब चराग़ों की शुरू होती है।
एक क़ुरान-ए-सुख़न का सफ़ा खुलता है।
'असद उल्लाह खाँ ग़ालिब' का पता मिलता है